सारंगी वादन के परिप्रेक्ष में पटियाला घराना

ड़ा आलोक शर्मा

हिन्दुस्तानी संगीत के विभिन्न घरानों में पटियाला घराने का विशेष योगदान रहा है। यह पटियाला के नाम पर प्रमुख बातें आती रही है जेसे पटियाला जूति, पटियाला पगडी , पटियाला सलवार आदि।

पटियाला-घराना वास्तव में दिल्ली का ही घराना रहा है। दिल्ली घराने में सारंगी वादकों की बहुतायत रही है । पंजाब की स्थानीय शैलियों से प्रभावित होने के कारण 'पंजाब का घराना' बन गया और पटियाला रियासत में पनपने के कारण वह 'पटियाला-घराना' कहलाया। यह घराना अपनी तैयारी तथा खुबसूरती के कारण विश्व प्रसिद्ध हैं इस का कारण यहीं हो सकता हैं कि इस घराने मे दिल्ली, ग्वालियर, लखनऊ तथा जयपुर-घरानों की विशेषताओं को एक जगह समेटा गया है। **इस घराने के मशहूर दो कलाकार, अलिया-फत्तू ने दिल्ली के तानरस खां के अतिरिक्त लखनऊ-घराने के बड़े अहमद खां तथा मुबारकअली, जयपुर के वहराम खां तथा ग्वालियर के हद्दू खां से भी तालीम प्राप्त की थी।**

पटियाला घराने की नींव उस्ताद मियां कालू खाँ ने रखी थी। एक विख्यात सारंगी वादक थे इनके पुत्रा उस्ताद नबी बक्श, उस्ताद अली बक्श और उस्ताद फतेह अली ने भी अपने पिता उस्ताद कालू खाँ से संगीत कि शिक्षा प्राप्त की थी। टोंक रियासत के नवाब ने उस्ताद अली बक्श और फतह अली को करनेल और जरनेल की उपाधि से नवाजा था। उस्ताद काले खाँ कसूर वाले और उस्ताद फतेह अली खॉ के शिष्य थे ।

इस घराने की विशेषता तैयारी के साथ साथ मुलायमित भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। सपाट तानो से यह पटियाला घराना अन्य घरानों से स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देता हैं । इस घराने की ताने, लय के अनुसार बॅटती है। बंदिशें तान के अनुसार अलग-अलग होती है। इस गायकी के निर्माण में पंजाब का टप्पा , सिक्ख शबद, सूफी बानी तथा कव्वाली का भी काफी प्रभाव देखा जा सकता है। यही प्रभाव यहां की ठुमरी और वाद्ययंत्रों के बाज पर भी पड़ा है। अलिया-फत्तू की रची हुई ठुमरियॉ अपनी कोमलता, रसीलेपन और टप्पेवाली तानों के लिए आज भी संगीत-संसार में प्रसिद्ध हैं **स्व. बड़े गुलाम अली खां बरकत अली नजाकत सलामत अली एवं पं. जगदीश प्रसाद का ठुमरी-गायन इसी घराने का प्रतिनिधित्व करता रहा है।**

पटियाला घराने की विशेषताएं:

पटियाला घराने में पंजाबी ठुमरी गायकी का अपना एक अलग स्थान है जो बनारस अंग की ठुमरी से भिन्न है श्रृंगार रस की प्रधानता यद्यपि दोनों ही अंग की ठुमरियों को देखने से मिलता है परन्तु पंजाब अंग ठुमरी में छोटी-छोटी हरकतों खटके मुरकियों के अतिरिक्त बोलों के बीच-बीच में छोटी-छोटी सपाट तानों का भी प्रयोग किया जाता है, ठुमरी के बोलों में शेर'' आदि कहने की भी प्रथा है जो उर्दू शेर के अन्दाज से ही कही जाती है एवं इस घराने की यह एक प्रमुख विशेषता है चाहे हो बडे गुलाम अली खां हेा या पं जगदीश प्रसाद इन दोनों की ठुमरियों में शेरो शायरी स्पष्ठ देखी जा सकती है।

पटियाला घराने की गायकी की प्रमुख विशेषताएँ:

जहाँ तक पटियाला घराने के स्वर- साधना का सवाल है वह स्पष्ट रूप से दुसरे घरानों से अलग नजर आता है। क्योकि इस गायन शैली को आत्मसात करने के लिए पूरे गले को खोलकर आवाज निकाली जाती है घराने के में मींड, घसीट, खटका और मुर्की और मुश्किलात भरी तान स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है ''इस घराने में चार घरानों का अंग स्पष्ट रूप से दिखाई देता है'' और ये घराने है ग्वालियर अंग, जयपुर और दिल्ली और लखनऊ अंग स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस घराने में पंजाब के लोक संगीत की छाया स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

पटियाला घराने की शिक्षण पद्धतिः

पटियाला घराने की शिक्षण पद्धति के विषय में उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब के पौत्रा व उस्ताद करामत अली खाँ साहब के पुत्रा मज़हर अली व जवाद अली खाँ (गायक) से जब मैने भेट की, व शिक्षण-पद्धति के विषय में पूछा तो वे बतलाते है कि हमारे यहाँ पर संगीत विद्यार्थी को स्वर साधना के साथ-साथ षड़ज का अभ्यास विशेषरूप से कराया जाता है । १

पटियाला घराने की गायकी की विशेषताएँ पटियाला घराने की गायकी जहाँ तैयारी पर आधारित है वही कोमलता पर भी उतना ही ध्यान दिया जाता है। अतः इस मकसद से स्वर साधना के बाद शुरू से ही कठिन स्वर समूहो अलंकारिक तानो, पल्टो का अभ्यास कराया जाना नितान्त आवश्यक है। उसके बाद विलम्बित व द्रुत लय की बंदिशो में मुखड़ा पकडने के विभिन्न अदाज भी इस घराने की ख़ासियत रही है। विलम्बित बंदिशो में स्वर-भराव के पश्चात् ''गमक'' का प्रयोग व द्रुत लय की बंदिशों में फिरत की तानो, व सपाट तानो का भी अभ्यास कराया जाना आवश्यक समझा जाता है। हमारे घराने में विलम्बित के तोडे मध्य व द्रुत से अलग ढाचें के होते है व तानों की बंदिशे तानो के अनुसार अलग-अलग होती है जिसके अभ्यास पर काफी बल दिया जाता है।

पटियाला घराने की मुख्य बिन्दु निम्नानुसार है ।

१. इस घराने में सारंगी वादन पूर्वजों से चला आ रहा है। स्वयं कालू खां एक उत्कृष्ट सारंगी वादक थे तथा स्वयं उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ भी शुरू में सारंगी वादन ही करते थे। बाद में एक उत्कृष्ट गायकी में अपना नाम विश्वविख्यात किया।
२. यह घराना अपनी तैयारी के लिए प्रसिद्व है। इसमें हर रंग की गायकी विद्यमान है। इसका प्रमुख कारण यही हो सकता है कि इस घरानें में दिल्ली ग्वालियर जयपुर घरानों की विशेषताओं को एक जगह समेटा गया है।
३. इस घराने के प्रसिद्ध कलाकार अलिया फत्तू ने दिल्ली के उस्ताद तानरस खाँ के अतिरिक्त लखनऊ घराने के बडे अहमद खाँ व मुबारक अली खाँ व जयपुर घराने के बहराम खाँ तथा ग्वालियर के हद्दु खाँ साहब से तालीम ली थी।
४. इस घराने की विशेष तैयारी के साथ कोमलता भी है। गायकी के सभी अंग और तरानों की गायकी तथा अतिद्रुत लय में संचार करने वाली सपाट तानो से यह घराना अन्य घरानो से स्पष्ट रूप से अलग दिखायी देता है।
५. यहाँ पर तानें लय के अनुसार बंटती हैं और तानों की बंदिशे भी तालों के अनुसार ही अलग-अलग होती है।
६. पंजाब घराने की गायकी पर टप्पा, सिक्ख शब्द, सूफी वाणी तथा कव्वाली का काफ़ी प्रभाव देखा जा सकता है और यही प्रभाव यहाँ की ठुमरी और वाद्य यंत्रों के बाज पर भी पडा है। अलिया फत्तू द्वारा रचित ठुमरियां अपनी कोमलता रसीले पक्ष और टप्पे वाली तानों के लिए आज भी संगीत संसार में अपनी अलग पैठ जमाये हुए है। इस घराने में ख़्याल की कलापूर्ण बंदिशे अलंकारिक वक्र व फिरत की तानों का प्रयोग गायकी में विशेष रूप से किया जाता है।

यद्यपि उस्ताद नज़ाकत व सलामत अली खाँ भारत विभाजन तक पटियाला दरबार के गायक रहे पर अपने आपको ये शाम चौरासी'' घराने का घोषित करते है जो वास्तव में पटियाला घराने की ही उपशाखा है अतः दिल्ली व पटियाला घराने का पुराना सम्बन्ध रहा है। यही अंग दोनो घराने की गायकी में स्पष्ट देखने को मिलता है । १

पटियाला घराना वास्तव में दिल्ली का ही घराना रहा परन्तु पंजाब की स्थानीय शैलीयों से प्रभावित होने के कारण पंजाब घराना बना और पटियाला रियासत में पनपने के कारण वही पटियाला घराना कहलाने लगा। २

संदर्भः

१- Tradition of Hindustani Music By Manorma Sharma page ८६
२. दिल्ली घराने का संगीत में योगदान रमेश मिश्रा साक्षात्कार द्वारा पृष्ठ सं. ८१ राधा प्रकाशन, नई दिल्ली,
३. संगीत घराना अंक १९८२ पृष्ठ संख्या - २७
४. भेंट वार्ता पं. जगदीश प्रसाद दिनांक ०७ सितम्बर, २००८